वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में अध्यनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन

प्राप्तिः 29.08.2026
स्वीकृतः 10.09.2026

73

संजना यादव
शोधार्थी
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ़
ईमेलः *yadav.sanjana3010@gmail.com*

प्रो0 मंजू यादव
विभागाध्यक्ष,
शिक्षक शिक्षा (बी.एड. विभाग)
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ़

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्यनरत बी.एड प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन करना था। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया व राजा महेंद्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय अलीगढ़ के आठ महाविद्यालय चार वित्तपोषित तथा चार स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 400 बी.एड प्रशिक्षुओं का चयन किया गया। अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सांवेगिक बुद्धि में लिँग,निवास तथा संकाय के आधार पर अंतर होता है तथा महिला व पुरुषों, शहरी व ग्रामीण एवं विज्ञान व कला वर्ग की सांवेगिक बुद्धि के परिणाम में भी अंतर प्राप्त हुआ।

मुख्य शब्द

बी. एड. प्रशिक्षु, सांवेगिक बुद्धि।

प्रस्तावना

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल साक्षरता या किताबी ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि इसका मुख्य ध्येय मानव का सर्वांगीण विकास करना है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास के संतुलन से है। प्राचीन समय से लेकर आधुनिक काल तक शिक्षा पद्धतियों में बौद्धिक विकास को बहुत महत्व दिया गया, लेकिन समकालीन मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जीवन की वास्तविक सफलता में केवल बुद्धि लब्धि (IQ) ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके साथ संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) का होना अनिवार्य है।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.073

संवेगात्मक बुद्धि के अभाव में एक अत्यधिक बुद्धिमान व्यक्ति भी अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में असफल हो सकता है। यह बुद्धि मनुष्य को अपनी भावनाओं को समझने, उन्हें नियंत्रित करने और समाज के साथ एक स्वस्थ समन्वय स्थापित करने की शक्ति प्रदान करती है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ एक संवेगात्मक प्राणी भी है। हमारे भीतर सुख, दुख, क्रोध, भय, ईर्ष्या और प्रेम जैसी अनेक भावनाएं निरंतर प्रवाहित होती रहती हैं। संवेगात्मक बुद्धि का सीधा संबंध इस बात से है कि हम इन भावनाओं के प्रति कितने जागरूक हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी संवेगात्मक बुद्धि का उपयोग करता है, तो वह सबसे पहले खुद के भीतर उठने वाले संवेगों को पहचानता है।

शिक्षा के सर्वांगीण उद्देश्य सभी पूर्ण होते हैं जबकि योग्य कर्मठ व निष्ठावान शिक्षक हो। कुछ लोगों का यह मानना है कि शिक्षक पैदा होते हैं और अध्ययन अध्यापन के लिए मेधावी लोग ही उपयुक्त होते हैं। लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि एक कुशल अध्यापक के लिए विषय के ज्ञान के साथ–साथ अपने विषय के प्रस्तुतीकरण, अपनी बात को समझने की कला में निपुणता प्राप्त होनी चाहिए। जो इस कला में दक्ष होगा वही विद्यार्थी को स्वस्थ स्थाई अधिगम के लिए प्रेरित कर सकता है।

शिक्षक शिक्षा भावी शिक्षकों के लिए उनकी दक्षता में सुधार तथा उनकी तकनीकी क्षमताओं का विकास करती है। एक अध्यापक छात्र के व्यवहार को आकार देता है अतः उसे भावात्मक रूप से मजबूत व संतुलित होना चाहिए। प्रशिक्षण स्तर पर भावात्मक बुद्धि को बढ़ाकर बी. एड. प्रशिक्षुओं की स्वतंत्रता पूर्वक सोचने की क्षमता को बढ़ाकर उन्हें जिम्मेदार अध्यापक व संपूर्ण नागरिक के रूप में विकसित किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, यदि उसे किसी बात पर क्रोध आ रहा है, तो वह यह समझने की कोशिश करता है कि इस क्रोध का वास्तविक कारण क्या है और इसके परिणाम क्या हो सकते हैं। अपनी भावनाओं को समझने के बाद, वह उन्हें दबाने के बजाय उनका सही दिशा में प्रबंधन करता है। संवेगों का सही प्रबंधन ही बी. एड. प्रशिक्षुओं को एक संतुलित और मर्यादित व्यक्तित्व प्रदान करता है।

संवेगात्मक बुद्धि केवल स्वयं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका एक बहुत बड़ा हिस्सा दूसरों की भावनाओं को समझने से जुड़ा है।

साहित्यावलोकन

1. रमन टी.वी. (2013) ने शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं संवेगात्मक बुद्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि शिक्षक में भावात्मक दक्षता का होना आवश्यक है। शिक्षक स्वयं पर नियंत्रण कर सके एवं कक्षागत शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में गुणवत्ता ला सके। छात्र की समस्या को पहचान कर उनका हल खोज सके।
2. नीवा दोलेव व शोध (2016) ने इजरायल के शिक्षकों पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि दक्षता में वृद्धि हुई तथा उन्होंने व्यावसायिक समूह में अपने इस व्यवहार को सकारात्मक रूप से परिवर्तित किया।

3. शर्मा, राधा (2016) ने माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं भूमिका प्रतिबद्धता का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि माध्यमिक स्तर के महिला अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि पुरुष अध्यापकों से अधिक पाई गई। तथा संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न आयामों स्वयं एवं अन्य के प्रति जागरूकता, व्यावसायिक उन्मुखीकरण, अंतरू वैयक्तिक प्रबंधन एवं अंतर्वैयक्तिक प्रबंध में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. जनक सिंह (2017) ने शिक्षक प्रशिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षक दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में पुरुषों की तुलना में संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है। भावात्मक बुद्धि व शिक्षक प्रभावशीलता में सार्थक सहसंबंध होता है।

वर्तमान समय में प्रशिक्षुओं के संवेगों में मानसिक असंतुलन व्याप्त है। प्रशिक्षण स्तर पर जबकि प्रशिक्षण शिक्षण कौशल सीखता है जिसमें वह छात्रों से अंतरूक्रिया भी सीखता है ऐसे में प्रशिक्षण स्तर पर सांवेगिक बुद्धि व प्रभावशाली शिक्षण में संबंध ज्ञात करने के हेतु शोधकर्ताओं का यह एक प्रयास है।

समस्या कथन

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय में अध्यनरत बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके निवास के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके संकाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि मे उनके लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके निवास के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके संकाय के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन राजा महेंद्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय अलीगढ़ के महाविद्यालयों तक सीमित रहा है तथा टी–टेस्ट का परीक्षण सार्थकता के 0.01 स्तर पर किया गया है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.073

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत बी. एड. प्रशिक्षुओं का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। इस हेतु राजा महेंद्र प्रताप सिंह विश्वविद्यालय अलीगढ़ के बी.एड. महाविद्यालय का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है। द्वितीय स्तर पर चारों महाविद्यालय से, 400 बी. एड. प्रशिक्षुओं (100 वित्तपोषित महाविद्यालय से एवम् 100 एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालय से) का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है –

सांवेगिक बुद्धि का मापन करने के लिए, एस.के. मंगल (2004): "मंगल इमोशनल टेस्ट इन्वेंटरी" का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

संपूर्ण न्यादर्श से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम निम्नलिखित है–

सारणी – 1

वित्तपोषित महाविद्यालय के बीएड प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में लिँग आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

बी.एड. प्रशिक्ष	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
महिला	100	80.19	6.18	12.98
पुरुष	100	73.54	4.99	

सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित महाविद्यालय के महिला और पुरुष बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 80.19 व 73.54 है तथा क्रांतिक अनुपात 12.98 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि में लिँग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृति की जाती है अर्थात महिला और पुरुष बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि में अंतर होता है क्योंकि महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान पुरुष बी. एड. प्रशिक्षुओं से अधिक है अतरू कहा जा सकता है कि महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

सारणी – 2

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बीएड प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में लिँग के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

बी.एड. प्रशिक्ष	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
महिला	100	76.19	6.18	10.98
पुरुष	100	69.54	4.99	

सारणी –2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के महिला और पुरुष बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 76.19 व 69.54 है तथा क्रांतिक अनुपात 10.98 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि में लिँग के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृति की जाती है अर्थात महिला और पुरुष बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि में अंतर होता है क्योंकि महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान पुरुष बी. एड. प्रशिक्षुओं से अधिक है अतरू कहा जा सकता है कि महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

सारणी – 3

वित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके निवास के आधार पर विश्लेषण

बी.एड. प्रशिक्ष	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
महिला	100	80.19	8.18	12.98
पुरुष	100	73.54	4.99	

सारणी –3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित महाविद्यालय के शहरी और ग्रामीण बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 80.19 व 73.54 है तथा क्रांतिक अनुपात 10.98 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि में निवास के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृति की जाती है अर्थात शहरी और ग्रामीण बी.एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि में अंतर होता है क्योंकि शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान ग्रामीण बी. एड. प्रशिक्षुओं से अधिक है अतरू कहा जा सकता है कि शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं की संवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

सारणी – 4

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का उनके निवास के आधार पर विश्लेषण

बी.एड. प्रशिक्ष	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
शहरी	100	76.19	8.18	10.98
ग्रामीण	100	73.54	4.99	

सारणी– 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के शहरी और ग्रामीण बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 76.19 व 69.54 है तथा क्रांतिक अनुपात 10.98 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में निवास के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृति की जाती है अर्थात शहरी और ग्रामीण बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में अंतर होता है क्योंकि शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान ग्रामीण बी. एड. प्रशिक्षुओं से अधिक है अतः कहा जा सकता है कि शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.073

सारणी – 5

वित्तपोषित महाविद्यालय के बीएड प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में संकाय के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

बी.एड. प्रशिक्ष	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
विज्ञान संकाय	100	80.19	6.18	12.98
कला संकाय	100	73.54	4.99	

सारणी–5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तपोषित महाविद्यालय के विज्ञान एवम् कला संकाय के बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 80.19 व 73.54 है तथा क्रांतिक अनुपात 12.98 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में संकाय के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृति की जाती है अर्थात विज्ञान एवम् कला संकाय के बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में अंतर होता है क्योंकि विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान कला संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं से अधिक है अतरू कहा जा सकता है कि विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

सारणी – 6

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के बीएड प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में संकाय आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण

बी.एड. प्रशिक्ष	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात
विज्ञान संकाय	100	80.19	6.18	10.98
कला संकाय	100	73.54	4.99	

सारणी–6 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के विज्ञान और कला संकाय बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि का मध्यमान 76.19 व 69.54 है तथा क्रांतिक अनुपात 10. 98 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में संकाय के आधार पर सार्थक अंतर नहीं है अस्वीकृति की जाती है अर्थात विज्ञान और कला संकाय के बी.एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में अंतर होता है क्योंकि विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं का मध्यमान कला संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं से अधिक है अतः कहा जा सकता है कि विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

निष्कर्ष

1. वित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में उनके लिंग के आधार पर अन्तर होता है अर्थात वित्तपोषित महाविद्यालयों की महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।
2. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में उनके लिंग के आधार पर अन्तर होता है अर्थात स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की महिला बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

3. वित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में का उनके निवास के आधार पर अन्तर होता है अर्थात वित्तपोषित महाविद्यालयों की शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।
4. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में उनके निवास के आधार पर अन्तर होता है अर्थात स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की शहरी बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।
5. वित्तपोषित के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में उनके संकाय के आधार पर अन्तर होता है अर्थात वित्तपोषित महाविद्यालयों की विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।
6. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि में उनके संकाय के आधार पर अन्तर होता है अर्थात स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के विज्ञान संकाय के बी. एड. प्रशिक्षुओं की सांवेगिक बुद्धि अच्छी होती है।

संदर्भ

1. रमन, टी. वी. (2013) रू इमोशनल इंटेलिजेंस एंड टीचर इफेक्टिवेनेस एंड एनालिसिस वॉइस इन इंडिया, अमेरिका जनरल ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी, वॉल्यूम 3 (6) पृ0सं0–**122– 126**।
2. नीवा दोलेव व शोश (2016) "इजरायल के शिक्षकों पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन।" इमोशनल जनरल ऑफ इमोशनल एजुकेशन वॉल्यूम 8, इश्यू– 1 पृ0सं0–**75– 94।**
3. शर्मा, राधा (2016) ने माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं भूमिका प्रतिबद्धता का अध्ययन आई. जे. ए. आर. आई. आई. ए. वॉल्यूम –3 इशू 4, पृ0सं0–**2357–2362**
4. जनक सिंह (2017) "शिक्षक प्रशिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षक दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन।" आई. जे. ए. आर. आई. आई. ए. वॉल्यूम –3 इशू 4, पृ0सं0–**2333–2347।**
5. मंगल एसके (2004) मंगल इमोशनल इंटेलिजेंस इन्वेंटरी आगरा साइकोलॉजिकल रिसर्च सेल।